[This question paper contains 4 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY 06/6/24 Kalkaji, New Delhi-19

Your Roll No.............

H

Sr. No. of Question Paper : 1762

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिन्दी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या करें : (7+8=15)

(क) "पापा ने इस बार उसे चिट्ठी लिखने को कहा था। पर उसने नहीं लिखी। लिखना तो खूब अच्छी तरह जानता है, लिख भी सकता है। पर तब वह सारी बातें समझता कहाँ था? तब तो उसे यह भी नहीं मालूम था कि मम्मी-पापा में पक्कीवाली कुट्टी

हो गई है। पर अब कैसे लिख सकता है भला! वह पूरी तरह मम्मी की तरफ है और मम्मी से उनकी कुट्टी है तो फिर बंटी से भी है। ऐसा ही तो होता है"।

अथवा

"उन्माद और ज्ञान में जो भेद है, वही वासना और प्रेम में है। उन्माद अस्थायी होता है और ज्ञान स्थायी। कुछ क्षणों के लिए ज्ञान का लोप हो सकता है, पर वह मिटता नहीं। जब पागलपन का प्रहार होता है, ज्ञान लोप होता हुआ विदित होता है; पर उन्माद बीत जाने के बाद ही ज्ञान स्पष्ट हो जाता है। यदि ज्ञान अमर नहीं है, तो प्रेम भी अमर नहीं है, पर मेरे मत में ज्ञान अमर है- ईश्वर का एक अंश है और साथ ही प्रेम भी"।

(ख) "आनंद के अवसर पर हम अपने दुखों को भूल जाते हैं। हाफ़िज़ जी को सलीम के सिविल-सार्विस से अलग होने का, समरकान्त को नैना की मृत्यु का और सेठ धनिराम को पत्र-शोक का रंज कम न था, पर इस समय सभी प्रसन्न थे। किसी संग्राम में विजय पाने के बाद योद्धागण मरनेवालों के नाम को रोने नहीं बैठते। उस वक्त तो सभी उत्सव मनाते हैं। शादियाने बजते हैं, महफिलें जमती हैं, बधाइयाँ दी जाती हैं। रोने के लिए हम एकांत ढूंढते हैं, हँसने के लिए अनेकांत"।

अथवा

कुमारगिरी चित्रलेखा को समझ न सके। चित्रलेखा में एक असाधारण व्यक्तित्व था। और वह व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली था! कुमारगिरि के हृदय में एक बार फिर यह विचार आया कि वे चित्रलेखा को दीक्षा देने से इंकार कर दें। उन्होने चित्रलेखा से कहना आरंभ कर दिया "देवी चित्रलेखा! मैं तुम्हें समझने में असमर्थ हूँ। तुम्हारा व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्व से नीचा नहीं है। इसलिए दीक्षा देना मेरा कहाँ तक उचित होगा, इसका निर्णय करना होगा। जब तक मैं इसका निर्णया न कर लूँ..."।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखें : (7+8=15)

(क) मैत्रेयी पुष्पा

(ख) जैनेन्द्र

(ग) अज्ञेय

(घ) प्रेमचंद

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास में वर्णित विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों से प्रेरित है'- इस कथन की युक्ति-संगत व्याख्या कीजिये।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

कथावस्तु की दृष्टि से 'चित्रलेखा'! उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए।

5. 'आपका बंटी' एक दरकते परिवार का आईना है, कथन के आधार पर उपन्यास में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की शिल्पगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिये।

[This question paper contains 2 printed pages]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

आपका अनुक्रमांक..........

H

Sr. No. of Question Paper : 5113

Unique Paper Code : 2052102401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए आचार्य वामन के योगदान को लिखिए। (15)

अथवा

भारतीय काव्यशास्त्र में औचित्य संप्रदाय का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. काव्य हेतु किसे कहते है? संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य हेतुओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

P.T.O.

काव्य लक्षण क्या हैं? काव्य लक्षणों को उदाहरण सहित समझाइये।

3. रस को परिभाषित करते हुए वीर और शांत रस को उदाहरण सहित समझाइये। (15)

अथवा

विभिन्न विद्वानों के मतों को विश्लेषित करते हुए रस निष्पत्ति की अवधारणा को समझाइये।

4. व्यंजना शब्दशक्ति को उदाहरण सहित समझाइये। (15)

अथवा

शब्द अलंकार और अर्थ अलंकार के भेद को उदाहरण सहित समझाइये।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (10×3=30)

(क) सवैया और छप्पय छंद

(ख) रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) काव्य प्रयोजन

(घ) वीभत्स रस

(ङ) लक्षणा शब्द शक्ति

(च) पंडितराज जगन्नाथ

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

DESHBANDHU COLLEGE
H
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 5218

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : Hindi Upanyas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे　　　　　　　　　　पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी उपन्यास के उदभव पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए। (15)

अथवा

हिन्दी उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

2. मुंशी प्रेमचंद अथवा मन्नू भंडारी के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। (15)

3. कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित समस्याओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन का दस्तावेज है' - इस कथन के आलोक में अमरकांत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. रागदरबारी उपन्यास में निहित व्यंग्यात्मक यथार्थ को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

रागदरबारी उपन्यास के शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए रूप्पन बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12)

(क) "शान्तिकुमार ने आवेश से कहा-'कहीं नहीं। शास्त्र में यह लिखा है कि घी में चरबी मिलाकर बेचो, टेनी मारो, रिश्वतें खाओ, आँखों में धूल झोंको और जो तुमसे बलवान हैं, उनके चरण धो-धोकर पियो, चाहे वह शास्त्र को पैरों से ठुकराते हों।

तुम्हारे शास्त्र में यह लिखा है, तो यह करो। हमारे शास्त्र में तो यह लिखा है कि भगवान् की दृष्टि में न कोई छोटा है, न बड़ा, न कोई शुद्ध और न कोई अशुद्ध। उसकी गोद सबके लिए खुली हुई है।"

(ख) अंग्रेजों के ज़माने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखाते थे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। पिछले महायुद्ध के दिनों में, जब देश को जापान से ख़तरा पैदा हो गया था, उन्होंने सुदूर-पूर्व में लड़ने के लिए बहुत से सिपाही भरती कराए। अब जरूरत पड़ने पर रातोंरात वे अपने राजनीतिक गुट में सैकड़ों सदस्य भरती करा देते थे। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलिज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे। इसीलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को सँभालना पड़ा था।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए।

(9×2=18)

(i) उपन्यास के तत्व।

(ii) कर्मभूमि उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र - चित्रण।

(iii) उपन्यासकार फजीश्वरनाथ रेणु

(iv) रागदरबारी उपन्यास में ग्रामीण जीवन।